ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-5* June-2017
Innovation The Research Concept

राजेन्द्र यादव और उनकी कहानियाँ

संजय पासवान
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग,
खड़गपुर कॉलेज
पश्चिम मिदनापुर

सारांश

राजेन्द्र यादव नई कहानी आन्दोलन के शीर्षस्थ कथाकार हैं। नई कहानी का अभिधान कालपरक भी है और प्रकृति परक भी। राजेन्द्र यादव एक उपन्यासकार एवं उच्चकोटि के कहानी कार हैं। उनकी कहानियाँ यर्थाथपरक हैं जो संवेदना और शिल्प के धरातल पर परिवर्तन का आभाष देती हैं। उन्होंने भोगे हुए यर्थाथ को अपनी कहानी का विषय बनाया। सभी पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर जीवन को यर्थाथ रूप में देखने समझने का प्रयास किया एवं आधुनिक मानव के जीवन को विविध कोणों से देखकर उसका सही परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकण किया। स्वाधीन भारत के मानव जीवन को व्यक्ति मन के टूटन, कुंठा, निराशा, हताशा, अजनबीपन, परायेपन, भूख गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा जैसी समस्याओं ने बुरी तरह प्रभावित किया है। राजेन्द्र यादव एक सजग एवं शसक्त कथाकार थें। वे अपनी कहानियों में उन परतों को उघाड़ना चाहते हैं जिसे तत्कालीन समाज भोग रहा था। राजेन्द्र यादव की कहानियों पर समकालीन संदर्भों का दवाव प्रत्यक्ष परिलक्षित होता है, जिसका वर्तमान अनेक प्रकार की विसंगतियों और विद्रूपताओं से भरा है। राजेन्द्र यादव मध्यवर्ग के लेखक हैं और उन्हें इस जीवन का व्यापक अनुभव है। उनकी रचनाओं में मध्यवर्गीय जीवन के विविध पहलू देखने को मिलते हैं। उनकी रचनाएँ पाठक के मन में पूर्वनिश्चित व्यवस्था के प्रति विद्रोह पैदा करती है और उसे सामाजिक रीति–रिवाजों, कायदे–कानूनों पर पुनर्विचार करने को वाध्य करती हैं। यही एक संवेदनशील रचनाकार की रचनाओं को जीवन्तता प्रदान करती है। राजेन्द्र यादव व्यक्ति के माध्यम से समस्याओं को देखना उचित समझते हैं। उन्होंने अपने कथा साहित्य में समाज और व्यक्ति की समस्याओं और सामाजिक द्वंद्वों का चित्रण किया है। उनकी कहानियों में परिवेश बोध की चेतना नैसर्गिक और सामाजिक परिवेश के कथ्य से संबंधित यथावश्यक अंश सर्वत्र देखने को मिलता है। उनकी कहानियों में अनुभव की प्रामाणिकता है। उनकी सामाजिक समस्याएँ मध्यवर्गीय लेखक के अनुभव क्षेत्र से उपजती हैं। हिन्दी में सबसे अधिक रचनात्मक माध्यम से लेखकीय व्यक्तित्व की समस्या पर राजेन्द्र यादव ने चिंतन किया है। राजेन्द्र यादव सामाजिक दायित्व का निर्वाह करने वाले चेतनाशील कहानीकार हैं।

मुख्य शब्द : राजेन्द्र यादव की 'जहाँलक्ष्मी कैद है', 'छोटे छोटे ताजमहल','प्रतीक्षा', 'पुराने नाले पर नया फ्लैट', 'बिरादरी बाहर', 'भय' 'पास–फेल', 'खुले पंख टूटे डैने', 'सिंहवाहिनी' 'संबंध' 'तलवार पंचहजारी', 'लंचटाइम' 'आत्मा की आवाज', 'टूटना' आदि कहानियों की चर्चा की गई है।

प्रस्तावना

बात सन् 1998 की है। संजीव सम्मान समारोह में राजेन्द्र यादव मेरे शहर रानीगंज आए थे। ग्रुप में सबसे छोटा मैं, इसलिए मुझे उनकी आवभगत का दायित्व दे दिया गया। एक जीते जागते लिजेण्डरी पर्सन से मिलना, बतियाना मुझे कितना सुखद लगा इसे शब्दों में मैं बयां नहीं कर सकता। बात–बात में कहकहे लगाना, किसी अजनबी से आत्मीयतापूर्वक बातें करना तो कोई उनसे सीखे। पहली ही मुलाकात में वे इतने सहज होकर आत्मीय संवाद कर रहे थे कि उनके व्यक्तित्व ने मुझे मोहित कर लिया। मुझे आज भी याद है उन्होंने पूछा था .....''संजय क्या कर रहे हो?''

मैंने कहा,....'' सर हिन्दी से आनर्स कर रहा हूँ।''

उन्होंने ठहाके लगाते हुए कहा,.....''कोई गर्लफ्रैंड वगैरह है, तो उससे मिलवाओ यार।''

मैंने लजाते हुए कहा.....'' इतना भी खुशनसीब नहीं हूँ सर।''

राजेन्द्र यादव से मेरी वह पहली और आखिरी मुलाकात थी। उसके बाद कई बार टेलीफोन पर बातें हुई। उन्होंने अपनी उसी पुरानी अंदाज में ठहाके लगाते हुए कहा यार संजय, कभी दिल्ली आओ खुलकर बातें करते हैं।

मेरा सौभाग्य है कि ऐसे इतिहास पुरूष से मुझे मिलने और बातें करने का अवसर मिला और मेरा दुर्भाग्य है कि मैं आज का प्रोग्राम कल पर टालता रहा और इस बीच वे काल कवलित हो गये। उनके गुजर जाने के बाद उन पर संस्मरण के रूप में दिनेश कुशवाहा का एक आलेख पढ़ा। जिसमें उनकी जिंदादिली का परिचय देते हुए उन्होंने किसी का एक शेर कहा था.....

'' बस यही एक बात अच्छी है मेरे हरजाई में।
वो कहीं भी जाता है, लेकिन शाम को घर लौट आता है।।''

आज देखता हूँ, शाम क्या रात हो गई, मेरा प्रिय कथाकार जिस दुनिया में चला गया है, वहाँ से लौटकर कोई नहीं आता। अब मानस में केवल उनकी यादें रह गई हैं।

न जाने क्यों इस युग पुरूष के बारे में दो बातें कहने के लिए मन बेचैन है। जानता हूँ मैं कोई नई बात नहीं कह रहा हूँ, लेकिन अपने प्रिय कथाकार के प्रति अपनी श्रद्धाजंली की भावना को मैं कैसे रोक सकता हूँ। राजेन्द्र यादव से मिलने और जुड़ने के बाद मैंने उनकी रचनाओं के माध्यम से उन्हें जितना जाना, उसे मैंने दर्ज करने की कोशिश की। इस क्रम में यह बताना अनुचित नहीं होगा कि संजीव सम्मान समारोह में राजेन्द्र यादव ने स्वयं अपने बारे मे कहा था कि .....''मेरी समस्त कहानियाँ कूड़ा है। आज के दौर में उन्हें जला देने कि जरूरत है।''[1] क्या कोई कथाकार अपनी रचना के बारे में इतनी बेबाक टिप्पणी कर सकता हैं ? इसके बाद मैंने उनकी रचनाओं से गुजरते हुए जो अनुभव किया है उसे मैने दर्ज करने की कोशिश की है।

राजेन्द्र यादव अपनी कहानियों में उन परतों को उघाड़ना चाहते हैं, जिसे तत्कालीन समाज भोग रहा था। उनकी कहानियों पर समकालीन संदर्भों का दवाव प्रत्यक्ष परिलक्षित होता है, जिसका वर्तमान अनेक प्रकार की विसंगतियों और विद्रूपताओं से भरा हुआ है। वे मध्यवर्ग के लेखक हैं और उन्हें इस जीवन का व्यापक अनुभव है। उनकी रचनाओं में मध्यवर्गीय जीवन के विविध पहलू देखने को मिलते हैं। उनकी रचनाएँ पाठक के मन में पूर्वनिश्चित व्यवस्था के प्रति विद्रोह पैदा करती है और उसे सामाजिक रीति–रिवाजों, कायदे–कानूनों पर पुनर्विचार करने को बाध्य करती हैं। यही एक संवेदनशील रचनाकार की रचनाओं को जीवन्तता प्रदान करती है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में समाज और व्यक्ति की समस्याओं और सामाजिक द्वंद्वों का चित्रण किया है। उनकी कहानियों में परिवेष बोध की चेतना नैसर्गिक और सामाजिक परिवेश के कथ्य से संबंधित यथावश्यक अंश सर्वत्र देखने को मिलते हैं। उनकी सामाजिक समस्याएँ मध्यवर्गीय लेखक के अनुभव क्षेत्र से उपजती हैं। हिन्दी में सबसे अधिक रचनात्मक माध्यम से लेखकीय व्यक्तित्व की समस्या पर राजेन्द्र यादव ने चिंतन किया है।

उनकी आरम्भिक कहानियाँ बहुसंख्यक जनसाधारण की तकलीफ से जुड़ती हुई नजर आती हैं, परन्तु बाद में वे मध्यवर्गीय दायरे में संबंधों के तनाव और संबंध–हीनता की स्थितियों के ईर्द–गिर्द मँडराते नजर आते हैं, लेकिन जैसा कि 'ह्यूमन कन्सर्न' उनमें बराबर होता है, अतः उनकी कहानियाँ अस्वाभाविक या अवास्तविक नहीं लगतीं। शायद यह रचनात्मक ईमानदारी का नतीजा है कि जिस दुनिया, आम आदमी की दुनिया से कहानीकार का संपर्क घनिष्ठ और प्रगाढ़ नहीं है, उसे भी कहानी में घुसेड़ देने की बेईमानी उनमें नहीं हैं। उन्होंने जो देखा, जो भोगा उसे ही अपनी कहानियों में उतारने की कोशिश की है। उनका जीवन महानगर में ही ज्यादातर बीता, इसलिए उन्होंने अपनी कहनियों के विषय महानगरीय जीवन से ही चुने हैं। उन्होंने ग्रम जीवन पर एक भी कहानी नहीं लिखी।

उनकी कहानियाँ मानवीय जिजीविषा से लबरेज है तथा पारम्परिक आस्था की तस्वीर को खण्डित करती है। जीवन के छोटे से छोटे प्रसंग में निहित अन्तर्विरोध को उजागर करने की चेष्टा में रूपात्मकता के पुराने ढ़ाँचें को तोड़कर शिल्प के जितने नये प्रयोग उन्होंने किए हैं उतने शायद ही किसी और कहानीकार ने किए हों। इन प्रयोगों के कारण भाषा और शिल्प में कहीं कहीं दुरूहता भी आई है। .....''जिस मध्यवर्ग का चित्रण राजेन्द्र यादव ने अपनी कहानियों में किया है उस दौर में वह शिल्प न केवल नये, बल्कि बहुआयामी और उलझे हुए संश्लिष्ट बाहरी–भीतरी दबावों को झेल रहा था। संभवतः उन दबावों और तनावों की कथा अभिव्यक्ति बहुत सीधी और सरल नहीं हो सकती थीं।''[2]

''राजेन्द्र यादव की कहानियाँ आजादी के बाद तेजी से विघटित हो रही मानव–मूल्यों, स्त्री–पुरूष संबंधों, बदलती हुई सामाजिक और नैतिक परिस्थितियों से पैदा हो रही एक नई विचार–दृष्टि को रेखांकित करती है।''[3] उन्होंने व्यक्ति के माध्यम से समाज को समझने की लगातार कोशिश की है। यही कारण है कि उनकी कहानियों में रूपायित व्यक्ति–चेतना, सामाजिक चेतना से विरत या निरपेक्ष नहीं है, क्योंकि एक अनुभूत सामाजिक यथार्थ ही उनका यथार्थ है। उनके यहाँ भावुकता का अनियंत्रित व असंतुलित प्रवाह न होकर एक सजग व नियंत्रित 'इंटरप्ले' देखने को मिलता है और यह राजेन्द्र यादव जैसे सिद्धहस्त रचनाकार के कलम से ही हो सकता है।

यादवजी की कहानियों पर विचार करने के क्रम में उनकी प्रमुख एवं उल्लेखनीय कहानियों पर चर्चा करना यथोचित होगा। 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'छोटे–छोटे ताजमहल', 'किनारे से किनारे तक', 'टूटना' में राजेन्द्र यादव की ही नहीं, बल्कि हिन्दी कथा–साहित्य की महत्वपूर्ण कहानी हैं। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि राजेन्द्र यादव के योगदान से हिन्दी–कहानी व्यस्क हुई हैं। ये कहानियाँ शिल्प, भाषा और अपने बहुआयामी कथ्य के कारण ही बेजोड़ हैं। 'किनारे से किनारे तक' की अन्तर्यात्रा पाठक को ऐसे उदात्त सत्य से साक्षात्कार कराती हैं जिसके लिए वह तैयार नहीं है। 'प्रतीक्षा', 'पुराने नाले पर नया फ्लैट', 'बिरादरी बाहर', 'भय' 'पास–फेल', 'खुले पंख टूटे डैने','सिंहवाहिनी''संबंध''तलवार पंचहजारी', 'लंचटाइम' 'आत्मा की आवाज', 'टूटना' आदि कहानियाँ जिस गहरे रचनात्मक सरोकार से आई हैं वही राजेन्द्र यादव को विशिष्ट बनाती हैं। चूँकि राजेन्द्र यादव के पात्र अधिकांषतः मध्य वर्ग से सम्बन्धित है, सम्भवतः इसलिए

उनमें एक विशिष्ट किस्म की ऊर्जा का आभास है। यह वह वर्ग है, जो अपने कार्य कलाप और मानसिकता से बदलते यथार्थ का गहरा अहसास कराता है।

यादव जी के अधिकतर पात्र कथित दुर्बलता के शिकार हैं। यादव जी की परवर्ती कहानियाँ सम्बंधों के बदलने, टूटने और बनने की प्रक्रिया को मनोवैज्ञानिक परिपार्श्व में देखती है। शुरू की कहानियों में जहाँ घटना, कथ्य का बड़ा हिस्सा थी, इन कहानियों में चरित्रों की मनः स्थिति प्रधान हो गई है। इसलिए हम कह सकते हैं कि उनकी कहानियाँ अपेक्षाकृत महीन और जटिल होती गई हैं। सीधी बात को चक्करदार ढंग से कहानी में ढालने की उनमें एक खास प्रतिभा है। उनकी कहानियों में संवेदना और समस्या का अजीब सम्मिश्रण पाया जाता है। उन्होंने समकालीन जीवन से ही अपनी दृष्टि ग्रहण की है, अतः समकालीन मूल्यों के प्रति उनमें गहरी आस्था दृष्टिगोचर होती है। उनकी कहानियों में यह जीवन बोध कहानीकार द्वारा आरोपित न होकर अपने परिवेश की उपज है और इसी बिन्दु पर वह पुरानी कहानी से अलग हैं, क्योंकि पुरानी कहानी में जीवन बोध शाश्वत मूल्यों एवं आदर्शवाद से निर्मित था। यादव जी की कहानियों में कहीं कोई व्यक्ति रूढ़िग्रस्त पूंजीवादी मनोवृति के हाथों आहत होकर टूटता है 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', कोई दो वर्गों की मानसिकता के टकराव से टूटता है 'टूटना', तो कोई तीसरे के प्रवेश से टूटता है 'पुराने नाले पर नया फ्लैट', प्रतीक्षा', 'खुले पंख टूटे डैने', 'अनुपस्थित संबोधन' तो विशिष्ट मनःस्थिति की कहानी है। 'खुले पंख टूटे डैने' की मीनल अपनी जिन्दगी में प्यार की तलाश में भटकती रहती है। प्यार भावना के साथ उठती कामेच्छा का बार–बार दमन होने से वह कुण्ठित हो जाती है तथा हीनता–ग्रन्थि का शिकार होती है। उसे अपनी भाभी मकुन्तल से ताने सुनने पड़ते हैं कि.....''तुम किसी पुरूष पर जादू नहीं कर सकी.....मैं कहती हूँ कब तक इस इच्छा को दबाओगी।''[4] इस प्रकार वह अपनी ही भाभी के द्वारा प्रताड़ित होती है। उनकी कहानियो में अनेक समस्याएँ देखने को मिलती हैं। पारिवारिक समस्या में परिवार टूटना, हीनता, अकेलापन, आर्थिक समस्या, शोषण, अन्धविश्वास, यौन संबन्ध, बेकारी, वैश्याजीवन, विधवा विवाह आदि का चित्रण हुआ है।

राजेन्द्र यादव में एक अद्भुत रचनात्मक प्रवृति देखने को मिलती है, जिससे कथा के प्रारम्भ में ही वे एक रहस्य खड़ा कर देते हैं, जो जिज्ञासा और आतुरता पैदा करती है। रहस्यो का ताना बाना बुनने में यादव जी माहिर हैं और उन्हें एक गहरे शॉक के रूप में प्रस्तुत करने में लाजवाब हैं। 'अभिमन्यु की आत्महत्या' कहानी का पहला ही वाक्य रहस्य की सृष्टि करता है ''तुम्हें पता है? आज मेरी वर्षगांठ है, और आज मैं आत्महत्या करने गया था।''[5] 'खेल खिलौने' में सुधीन्द्र का पहला वाक्य सन्नाटे की तरह सब के मन में उतर आता है....'नलिनी मर गई।' 'किनारे से किनारे तक' कहानी का पहला ही वाक्य है .....''रूबी को पानी में धक्का देने का यही मौका है।''[6]

अध्ययन का उद्देश्य

राजेन्द्र यादव मेरे प्रिय कथाकार हैं। उनसे मेरी पहली मुलाकात सन् 98 मे रानीगंज में संजीव सम्मान समारोह में हुई थी। उस समय करीब से मिलने और उन्हें जानने का मौका मिला था। बेबाक तरिके से उनका बात करना मुझे काफी भाया था। एक अन्य संदर्भ में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' की पूर्व–पीठका में डॉ0 नगेन्द्र कहते हैं – ''दृष्टि की अपनी सीमाएँ भी होती हैं। वह सभी कुछ एक साथ नहीं देख सकती, इसलिये अंगों पर होती हुई अंगी का अवलोकन करती हैं।'' (पृष्ठ 54) मैंने भी दृष्टि की सीमा को स्वीकारते हुए राजेन्द्र यादव की कहानियों को अध्ययन का विषय बनाया, ताकि उनके विस्तृत कहानी–संसार का विस्तृत अवलोकन हो सके। व्यक्ति अतीत की अपेक्षा वर्तमान से अत्यधिक जुड़ाव महसूस करे तो यह कतई अस्वाभाविक नहीं है। समकालीन कहानीकारों में राजेन्द्र यादव की कहानियों ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया है। राजेन्द्र यादव नई कहानी के त्रयी कथाकारों मे एक प्रमुख स्तंभ हैं। उनकी रचनाओं में मध्यवर्गीय जीवन के विविध पहलू देखने को मिलते हैं। उनकी रचनाएँ पाठक के मन में पूर्वनिश्चित व्यवस्था के प्रति विद्रोह पैदा करती हैं। उन्होंने समाज के सबसे पिछड़े वर्ग, विशेष रूप से महिलाओं और दलितों को नया मंच दिया।

इन्हीं कारनों से मैने राजेन्द्र यादव को अपने अध्ययन का उद्देश्य बनाया है।

निष्कर्ष

प्रत्येक युग की अपनी विचारधारा व मान्यताएँ होती हैं और यही मान्यताएँ समाज में नए युग का सृजन करती है। राजेन्द्र यादव ने समाज के बदलते हुए रूप और युगीन बेचैनी को गहराई से चित्रित किया है। उन्होंने स्थितियों को अविचारात्मक दृष्टि से देखते हुए प्रमुख समस्याओं के प्रति पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है। साथ ही उन परिस्थितियों और विश्वासों पर प्रहार किया है जो पुरानी लकीर को पीटने के फेरे में जीवन के यथार्थ का सामना करने में असमर्थ हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *राजेन्द्र यादव का नीजी वक्तव्य, स्थान संजीव सम्मान समारोह, रानीगंज, 1998*
2. *प्रतिनिधि कहानियाँ, राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, पृ0– 6–7*
3. *प्रतिनिधि कहानियाँ, राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन, पृ0– 6*
4. *किनारे से किनारे तक , राजेन्द्र यादव, पृ0–162, राधकृष्ण पब्लिकेशन दिल्ली*
5. *ढोल और अपने पार, राजेन्द्र यादव, पृ0–124, राधाकृष्ण पब्लिकेशन दिल्ली*
6. *किनारे से किनारे तक, राजेन्द्र यादव, पृ0–124, राधाकृष्ण पब्लिकेशन दिल्ली*
7. *भारतीय आधुनिक कला – किरण प्रदीप, कृष्णा प्रकाशन मीडिया प्रा0 लि0 कृष्णा हाउस, शिवाजी रोड, मेरठ ।*

संदर्भ कला पत्र/पत्रिकायें

8. *कला दीर्घा*
9. *समकालीन कला पत्रिका*
10. *आकृति राजस्थान ललित कला अकादमी*